इकाई 10 फ्रांस और जर्मनी में औद्योगिक पूंजीवाद

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद :

- इंगलैंड की तुलना में जर्मनी और फ्रांस में एक अलग प्रकार के औद्योगीकरण का विकास निरूपित कर सकेंगे।
- जान सकेंगे कि, फ्रांस और जर्मनी में कृषि का वाणिज्यिकरण होने के बावजूद किसान जमीन से ही बंधे रहे जिसके कारण उद्योग के लिए पर्याप्त श्रमिक उपलब्ध नहीं हो सके, और
- यह बता सकेंगे, कि फ्रांस और जर्मनी का उदीयमान औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग राज्य पर जबरदस्त रूप से निर्भर था।

10.1 प्रस्तावना

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में फ्रांस और जर्मनी में औद्योगिक पूंजीवाद का विकास प्रत्यक्षतः इंगलैंड के औद्योगिक पूंजीवाद की प्रकृति से प्रभावित था। परंतु अपनी गहनता और अन्य कारकों के कारण वहां विकास दूसरे ढंग से हुआ। अठारहवीं शताब्दी के आरंभ के इंगलैंड की ही तरह अठारहवीं शताब्दी के मध्य में फ्रांसीसी सम्राट के राज्य-क्षेत्रों और जर्मन राज्यों में वाणिज्यिक गतिविधि के प्रमुख क्षेत्र स्थापित हो चुके थे। स्पेन, इटली,

नीदरलैंड में भी यही स्थिति थी। पिछली तीन शताब्दियों में विश्व स्तर पर शुरू हुई वाणिज्यिक गतिविधियों को इन वाणिज्यिक क्षेत्रों से जोड़कर देखना होगा। इसके अलावा भौतिक जीवन की जटिलताओं को भी ध्यान में रखना होगा जिसके कारण मांग बढ़ी और उनकी पूर्ति पूंजीवादी ढर्रे से की गई। हालांकि कई कारणों से 1740-1840 में इन वाणिज्यिक क्षेत्रों में लंदन, लीवरपूल, ब्रिस्टल और मैनचेस्टर जैसा औद्योगिक पूंजीवाद विकसित नहीं हो सका। हालांकि, फ्रांस नीदरलैंड, राइनलैंड, जर्मनी आदि में उसी प्रकार की कृषि विकसित थी जैसी इंगलैंड में।

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है। कई दशक पहले एलेक्जेंडर गेरशेनक्रोन ने वह पद्धति विकसित करने की कोशिश की जिसके द्वारा 'पिछड़ेपन' को दूर किया जा सकता था। उनके अनुसार यूरोप के 'पिछड़ेपन' का मुख्य कारण यह था कि राज्य का दखल और कुछ विशेष प्रकार के एजेंटों—पहले राज्य और फिर बाद में प्रमुख बैंक — का हस्तक्षेप पूंजीवाद के विकास में बाधा उत्पन्न कर रहा था। काल्पनिक होने के साथ-साथ गेरशेनक्रोन पद्धति में महाद्वीपीय औद्योगीकरण के सभी पक्षों पर गौर नहीं किया गया और न ही उनके महत्व को सही ढंग से आंका गया। निश्चित रूप से यूरोपीय औद्योगीकरण के लिए एक खास मॉडल के रूप में इसका महत्व है और यहीं से महाद्वीप में औद्योगिक पूंजीवाद के विकास संबंधी विचार-विमर्श का सिरा पकड़ा जा सकता है।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में औद्योगिक पूंजीवाद पूर्ण रूप से स्थापित हो चुका था परंतु इसके लिए उसे लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ा। इसलिए केवल इसी बात पर विचार नहीं करना चाहिए कि यूरोपीय राज्यों ने 'पिछड़ेपन' या अक्षमता के प्रति क्या रवैया अपनाया बल्कि औद्योगिक पूंजीवाद के विकास को एक वृहद परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए।

10.2 फ्रांस

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान फ्रांस की स्थिति इंगलैंड से भिन्न थी इसलिए फ्रांस में औद्योगिक पूंजीवाद का विकास भी अलग ढंग से हुआ। 18वीं शताब्दी के दौरान जब फ्रांस औद्योगिक पूंजीवाद की ओर बढ़ने के लिए तैयार हो रहा था उस समय वहां 'पुरातन-काल' (एनसिएन रेजिम) का माहौल था अर्थात परम्परागत मान्यताओं और रीति रिवाज का बोलबाला था जो निश्चित रूप से उत्पादकता और वाणिज्य व्यापार के अनुकूल नहीं था। इसके अलावा फ्रांस में अभी भी 'कृषक' कृषि का प्रचलन था जो क्रांति और नेपोलियन (1789-1815) के बावजूद कायम था। इसमें व्यापार और वाणिज्य को नहीं बल्कि परम्परा और जीवन जीने की इच्छा को महत्व दिया जाता था। इसके अलावा यहां कोयला और लोहा जैसे संसाधन भी नहीं थे जिसके कारण इंगलैंड में औद्योगिक पूंजीवाद का प्रभाव तेजी से फैला था।

आर्थिक इतिहासकार टॉम केम्प के अनुसार इन परिस्थितियों में औद्योगिक पूंजीवाद के धीमे विकास को फ्रांसीसी बुर्जुआ वर्ग की प्रकृति से जोड़ कर देखा जाना चाहिए। यह बुर्जुआ वर्ग खुद काम न करके अपने खेतों को किराए पर दे देता था और उनका पेशेवर और नौकरशाही रवैया बिलकुल खास तरह का था। केम्प का मानना है कि क्रांतिकारी और उत्तर क्रांतिकारी युग में इस वर्ग का प्रभाव बढ़ने से फ्रांस में औद्योगिक पूंजीवाद का विकास भी धीमी गति से हुआ। क्रांतिकारी भूमि बंदोबस्ती होने से जमीन समृद्ध लोगों के पास संकेंद्रित नहीं हुई और खेतों के छोटे-छोटे मालिक बरकरार रहे। इससे उद्योगों के लिए मजदूर उपलब्ध नहीं हो सके और छोटे-छोटे शहरों में पिछड़ी प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हुए छोटे-छोटे कार्य केंद्र (कारखाने) काम करते रहे।

10.3 अठारहवीं शताब्दी की पृष्ठभूमि

इंगलैंड की तरह फ्रांसीसी सम्राट के राज्य-क्षेत्रों में जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई (1700-1770) के बीच देश में जनसंख्या 20 मीलियन से बढ़कर 25 मीलियन हो गई)। इस दौरान वाणिज्यिक खेती में लोगों की रुचि बढ़ी और औद्योगिक उत्पादन के कई प्रमुख केंद्र बने। परंतु यहां विकास धीमी गति से हुआ। नई खोजें कम सामने आईं और उनका प्रयोग भी ज्यादा नहीं हुआ। इन सब पर हम आगे विस्तृत विचार करने जा रहे हैं।

10.3.1 कृषि

इस उपभाग में हम कृषि विकास और उसमें होने वाले परिवर्तनों की चर्चा करने जा रहे हैं। इस समय अधिकांश भूमि भूमिपतियों के हाथ में थी जो शक्तिशाली कुलीनवर्ग के सदस्य भी होते थे और कभी छोटे जंमीदार भी हो सकते थे। उनकी भू सम्पदा दो हिस्सों में विभक्त थी। एक पर कुलीनवर्ग भाड़े के मजदूरों से सीधे खेती करवाते थे और दूसरा हिस्सा उनके 'किसानों' के हाथ में था। वे खेतों के मालिक नहीं थे परंतु शताब्दियों से इस भू सम्पदा के साथ जुड़े हुए थे। कइयों को काश्तकारी अधिकार मिला हुआ था जिसके कारण वे व्यावहारिक तौर पर अपने खेत के मालिक ही थे (खासतौर पर अल्पाइन और पाइरेनिस क्षेत्रों में)। दूसरे मामलों में किसान भूमिपतियों को निर्धारित किराया नगद देता था। मेनमॉर्टेबल्स के नाम से जाने जानेवाले किसान अपनी भूमि केवल अपने वंशजों को दे सकते थे, इन्हें काश्तकारी अधिकार प्राप्त था और ये बड़े ताकतवर किसान थे। देश के अधिकांश उत्तरी हिस्सो (कौन्टेटिन उपमहाद्वीप के दक्षिण से मेन, टोरेन, ओरलिएनाइस, निवेरनाइस, बेरी होते हुए दक्षिण बरगंडी तक) में खुली खेती होती थी, हालांकि फसल लगाने की प्रक्रिया अलग-अलग थी। इन क्षेत्रों के दक्षिण में अधिकांश खेतों में बाड़े लगे हुए थे (किसानों और भूमिपतियों दोनों के खेतों में), कुछ ग्रामीण इलाके दूरस्थ स्थित थे परंतु जीवन-यापन के लिए वहां पर्याप्त उपज हो जाती थी। गैसकोनी और गिने जैसे तटीय इलाकों तथा सेंट्रल मेसिफ में जर्मीन अनुपजाऊ थी। दूसरी ओर गारोने घाटी की जमीन काफी उपजाऊ थी और उसका वाणिज्यिक उपयोग हो रहा था।

कई क्षेत्रों में और खासकर उत्तर पूर्व अर्थात फ्रेंच लैंडर्स में खेती की दिशा में कई विकास हुए (जहां हौलेंड, बेल्जियम और इंगलैंड में हुए कृषि संबंधी सुधारों का तेजी से प्रसार हुआ)। इंगलैंड में मौजूद "विकसित प्रविधियों" की जानकारी उन्हें डुहामेल डू मौन्सेयू के छः खडों में (1751-60 में प्रकाशित) कृषि सुधार संबंधी लेख जैसे प्रकाशनों, सस्ते साहित्यों और एक दूसरे से सुनकर प्राप्त हुई। प्रांतीय फ्रांस के शिक्षित समाजों (शिक्षाविदों) के बीच यह सूचना एक विचार-विमर्श का विषय थी; और लियोसीन के अधीक्षक, टरबोट जैसे प्रमुख शाही अधिकारियों तथा अन्य फिजियोक्रेट्स, जो कृषि के विकास में रुचि रखते थे, ने इन सूचनाओं का खूब प्रचार-प्रसार किया।

इन 'विकसित' प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से 1725-1789 के बीच उत्पादन में काफी बढ़ोत्तरी हुई (लगभग 40%)। ले रॉय लेडूरी का मानना था कि कृषि में हुई इस वृद्धि का प्रमुख कारण अनजुती जमीनों पर अनाज उपजाना था, वे जमीन का एक टुकड़ा भी अनजुता नहीं छोड़ना चाहते थे। नई तकनीकों के आगमन से उनकी लोकप्रियता और भी बढ़ी। इस प्रकार की खेती से अच्छी जमीनों पर खाद्यान्न उपजाने का दबाव कम हुआ और अब वहां इन जमीनों पर उच्च कोटि के अनाज और अंगूर उपजाया जा सकता था जिसकी फ्रांस में परम्परागत तरीके से खेती की जाती थी। इस कार्य से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में वाणिज्यिकरण बढ़ा जहां विशेषज्ञता पहले से मौजूद थी और विभिन्न क्षेत्रों के बीच सामानों का नियमित आदान-प्रदान होता था। इसी समय परिवहन में कई प्रकार से सुधार हुए (लैंग्यूडॉक, बरगंडी, प्रुवेन्स ब्रिटेनी, ऑवर्गने में) जिससे व्यापार की लागत कम हुई और वाणिज्यिकरण तेज हुआ। ये सारे सुधार दक्षिण के नहर मार्गों (केनाल डु मिडी) जैसे प्रमुख कार्यों के आस-पास स्थित थे।

अठारहवीं शताब्दी में हुए इन परिवर्तनों के कारण से फ्रांसीसी सम्राट के राज्य-क्षेत्रों में 1730/39-1780/89 के बीच अधिकांश कृषि वस्तुओं की कीमत 60 से 80 % गिरी और किसी-किसी वस्तु की कीमत तो 100 % तक गिर गई। इस विकास से नए-नए प्रयोग करने वाले भूमिपतियों को फायदा हुआ। कीमत और लागत गिरने से विभिन्न उद्यमी किसान खेतिहरों को भी फायदा हुआ जिन्हें भूमिपतियों की जमीन पर काश्तकारी का अधिकार प्राप्त था। इससे कई मेनमॉटेबल्स भी लाभान्वित हो सकते थे। जहां इनके पास अपेक्षाकृत सुरक्षित काश्तकारी थी यदि वे वहां जमकर खेती करते और जरूरत पड़ने पर कृषि मजदूर का काम भी करते तो ये कम सुविधा प्राप्त खेतिहर भी कम कीमतों और लागतों से लाभान्वित हो सकते थे (जहां इस अवधि में मजदूरी 25 से 30 % बढ़ गई थी)।

ले रॉय लैडूरे एक प्रमुख समस्या की ओर इशारा करते हैं और तथ्यों तथा आंकड़ों के सहारे यह बताते हैं कि जनसंख्या वृद्धि के समय काश्तकारी की स्थिरता ही फ्रांसीसी किसानों को थोड़ी बहुत सुरक्षा दे सकती थी। यह सही है कि भूमिपतियों के सीधे नियंत्रण वाले खेतों से ही किसानों को बेदखल किया जा सकता था और अधिकांश

खेतों पर भूमिपतियों का अप्रत्यक्ष नियंत्रण था इसलिए अधिकांश किसानों को बेदखली का खतरा नहीं था। परंतु अभी भी खुले खेतों में खेती होती थी और एक साल में तीन फसल लगाई जाती थी; इसलिए छोटे आकार के खेतों पर कोई भी सुधार अजमाना मुश्किल था। पश्चिम के इलाके में खुले खेत तो नहीं थे परंतु वहां भी इतनी कृषि भूमि नहीं थी जो बढ़ते हुए परिवारों का भरण-पोषण कर सके। किसान बंटाई (मेतेज) लेने लगे और भूमिपतियों के प्रत्यक्ष नियंत्रण वाले खेतों को किराए पर लेकर जोतने लगे। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ खेतों का किराया उपर्युक्त वर्णित अवधि में 142 % बढ़ गया। भूमिकर और धर्मशुल्क बढ़ने से (क्रमश: 60% और 25-30 %) किसानों पर और भी बोझ बढ़ गया।

परिणामस्वरूप कृषि का वाणिज्यिकरण तो पर्याप्त मात्रा में हुआ और अनाज का उत्पादन इतना होने लगा कि इससे बढ़ती हुई शहरी जनसंख्या का भरण पोषण हो सके परंतु फ्रांस के देहाती इलाकों में आर्थिक स्तरों में काफी उतार-चढ़ाव और असमानता थी और कुछ इलाकों में गरीबी का आतंक छाया हुआ था। इसी कारण एक ओर समकालीन अंग्रेज यात्री आर्थर यंग और इतिहासकार और दार्शनिक एलेसीज डे टौक्यूविले ने 1850 के दशक में अपनी पुस्तक में दो ऐसी विशेषताएं बताई हैं (जो परस्पर विरोधी हैं)। डे टौक्यूविले का कहना है कि फ्रांसीसी क्रांति (1789) के पहले फ्रांसीसी किसानों की स्थिति में सुधार हो रहा था जबकि इसी अवधि के बारे में लिखते हुए यंग ने बताया है कि फ्रांस में कृषि काफी पिछड़ी हुई थी और वहां काफी गरीबी थी।

चित्र 1 : भोजन के लिए लगी लम्बी पंक्ति : प्रारंभिक 19वीं शताब्दी के फ्रांस में शहर के गरीब लोग

10.3.2 व्यापार, उद्योग और निर्माण

कृषि उत्पादों के विपणन और उनके परिशोधन के कारण खेती के अलावा भी रोजगार के अन्य अवसर पैदा हुए। बड़े पैमाने पर अनाजों की कुटाई, वाइन का उत्पादन और इन उत्पादों का परिवहन, भंडारण और विपणन जैसे क्षेत्रों में काम करने के अवसर उपलब्ध हुए। हालांकि फ्रांस में बाजार की सक्रियता सब जगह एक समान नहीं थी। उत्तर और पूर्व (नोर्ड और फ्रांशे काम्टे के क्षेत्रों) में यह ज्यादा सक्रिय था और ब्रिटेनी तथा अन्दरूनी गैसकोनी में जो गैरोने घाटी से काफी दूर थे, में यह सक्रियता काफी कम थी। कृषि उत्पादों के व्यापार के कारण ही कई समुदायों और शहरों का उदय हुआ।

इस व्यापार में और भी कई आयाम जुड़े: इटली, जर्मनी, स्पेन या भूमध्य सागर पार मार्सिल्स से लेकर इंगलिश चैनल के तटीय क्षेत्रों पर इन उत्पादों के व्यापार होने से अतिरिक्त मुनाफा होने लगा। इस विनिमय से फ्रांसीसी बन्दरगाह सक्रिय हो उठे और इस व्यापार को और भी आगे बढ़ाने के लिए जहाजरानी उद्योगों का विकास हुआ। बॉर्डेक्स (कनाडा और फ्रेंच वेस्ट इंडीज से व्यापार करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण) और मार्सिल्स (विशेष तौर पर लेवेन्ट और सामान्यत: भूमध्य सागर के व्यापार के लिए प्रसिद्ध) दो प्रमुख शहर महत्वपूर्ण हो उठे। इसके अलावा फ्रांसीसी सम्राट व्यापारवादी नीतियों के कारण केवल फ्रांस के जहाजों पर ही समान ढोने की अनुमति देता था जिससे इस उद्योग को और भी बढ़ावा मिला।

फ्रांसीसी क्रांति तक तथा उसके बाद वाणिज्य और उद्योग के अनेक केंद्र ले क्रयूसॉट में फले फूले (1782 में शाही संरक्षण में स्थापित हुए थे) जहां लोहे का उत्पादन होता था। इसी प्रकार बेल्जियम सीमा पर स्थित एंजिन की कोयले की खदानें भी प्रमुख औद्योगिक केंद्र थे। इसके अलावा ऊपरी लोएर के निकट ऊपर ल्वायन में भी कोयले की काफी खुदाई की जाती थी। यहां उस समय की कोयले की सबसे बड़ा खादान स्थित थी। अठारहवीं शताब्दी में उत्तर और उत्तर पश्चिम में स्थित लिले, अमीन्स और सेंट डेनिस, ल्वायन (मध्य पश्चिमी फ्रांस में रोन/सावने में स्थित) और मल हाउस (अलसास में) में अक्सर इंगलिश मशीनों की सहायता से कपड़ों का उत्पादन होने लगा। राइम क्षेत्र के आस-पास स्थानीय स्तर पर मेरीनों भेड़ पालने से उत्कृष्ट ऊन का उत्पादन होने लगा। कपड़े के उत्पादन में 'पुटिंग आउट' पद्धति अपनाई जाने लगी जिसकी शुरुआत इंगलैंड में इस शताब्दी के आरम्भ में हो चुकी थी।

परंतु इस विकास के साथ-साथ इन उत्पादित वस्तुओं के लिए आंतरिक बाजार का तेजी से विकास नहीं हुआ। इससे देश के अन्दर व्यापार में कई तरह की समस्याएं सामने आई: औद्योगिक संगठन की समस्याएं सामने आई और औद्योगिक पूंजी की उपलब्धता में कमी आई (किसानों की कम आय तो एक समस्या थी ही)। इस परिस्थिति में अठारहवीं शताब्दी के दौरान फ्रांस में औद्योगिक पूंजीवाद के रूप में छोटे स्तर के उत्पादकों और औद्योगिक उत्पादकों के लिए क्षेत्रीय बाजारों का ही वर्चस्व रहा।

इन समस्याओं का कारण सुस्पष्ट है। देश में एक प्रकार का प्रशासन नहीं था और यहां व्यापारियों और उत्पादकों के लिए एक सुगठित बाजार भी उपलब्ध नहीं था। अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग ढंग से कर लगाए जाते थे (उदाहरण के लिए नमक कर की अदायगी के लिए क्षेत्रों को ग्रैन्डे (grande) और पेटिट गैबले (petite gabelle) में विभाजित किया गया था) और कर अदायगी की पद्धतियां भी अलग-अलग थीं। क्षेत्रीय अधिकार 'इस्टेट' के पास थे जबकि कुछ लोगों के पास पार्लेमेंट थे और यहां तक कि कानूनी व्यवस्था भी अलग-अलग थी (देश के दक्षिण में रोमन कानून चलता था जबकि उत्तर और मध्य में यह लागू नहीं होता था)। इसके अलावा श्रेणियों के प्रतिबंधों के कारण उद्योग के विस्तार में बाधा पहुंची। श्रेणियां उत्पादन के लिए नई खोजों और उपकरणों का इस्तेमाल नहीं करना चाहती थीं। शहरों के अधिकांश केंद्रीय इलाकों पर श्रेणियों का अधिकार था और बाजारों में उनकी सीधी पहुंच थी जबकि गैर-श्रेणि सदस्यों के उद्यम भी पिछड़े इलाकों में स्थित थे और उन्हें शाही प्रशासन का समर्थन भी प्राप्त नहीं था। इसके अलावा इंगलैंड की तरह गांवों में देशी बैंक भी उपलब्ध नहीं थे और औद्योगिक विकास के लिए प्रतिष्ठित व्यापारियों और उद्यमियों से भी पूंजी लेनी पड़ती थी जिससे उद्यम के विस्तार का क्षेत्र काफी सीमित हो जाता था।

एक प्रमुख समस्या यह भी थी कि व्यापार और उत्पादन में लगे लोगों को समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं थी। इंगलैंड के बिलकुल विपरीत फ्रांसीसी कुलीनवर्ग में व्यापार और उत्पादन को नीची निगाहों से देखा जाता था। यहां खरीद कर प्राप्त किए गए विशेषाधिकार को (सरकारी पद खरीदे जा सकते थे) या कुलीनवर्ग की उपाधि प्राप्त करने को विशेष महत्व दिया जाता था।

क्वेकर जैसे समुदाय, जो काफी संगठित थे और पूंजीवादियों में जिनका महत्वपूर्ण स्थान था, को फ्रांसीसी क्षेत्रों में कोई महत्वपूर्ण पद या अधिकार प्राप्त नहीं था।

उद्यमशीलता के सांस्कृतिक पक्ष के महत्व को जरूरत से ज्यादा महत्व नहीं दिया जा सकता। बॉडेक्स, मार्सिल्स और पेरिस जैसे धनी केंद्र इस बात के प्रमाण हैं कि इस समय व्यापार और उत्पादन का विकास हुआ था।

10.4 क्रांतिकारी और नेपोलियन युग

1789-1815 के दौरान फ्रांस में हुई राजनैतिक और सामाजिक पुनर्रचना का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ा और इससे देश के भीतर औद्योगिक पूंजीवाद की स्थिति भी प्रभावित हुई। फ्रांसीसी क्रांति पर आधारित भाग में प्रभुत्व परिवर्तनों की चर्चा की जा चुकी है। अत: यहां इसके कुछ प्रमुख प्रभावों और परिणामों की चर्चा की जाएगी। हालांकि यह परिवर्तन राष्ट्रीय बाजार के निर्माण में निर्णायक साबित हुआ। परंतु इस भाग में हम फ्रांसीसी क्रांतिकारी विधानों और नेपोलियन द्वारा किए गए उपायों से संबंधित प्रशासनिक पुनर्गठन के परिणामों की चर्चा करने नहीं जा रहे हैं (मसलन, कई प्रकार के कानूनी तथा अन्य भेदभावों का उन्मूलन) इस भाग में उस नेपोलियन कोड (कानूनी व्यवस्था) की भी चर्चा नहीं की जा रही है जिसने पूरे देश में एक समान वैधानिक व्यवस्था कायम की। इन सभी मुद्दों को इस युग के दो प्रमुख विषयों में विभाजित कर दिया गया है जिस पर बात करना जरूरी है। ये दोनों ही विषय औद्योगिक पूंजीवाद को मजबूती प्रदान करने और उनके प्रसार के लिए अत्यंत निर्णायक साबित हुए। इनमें पहला विषय जिसपर हम चर्चा करने जा रहे हैं वह है विशेषाधिकारों पर आक्रमण और कृषि भूमि के स्वामित्व अधिकारों में परिवर्तन तथा श्रेणि ढांचों का उन्मूलन। दूसरे विषय के अन्तर्गत युद्ध के परिणाम और राज्य विस्तार प्रसार का व्यापार और उत्पादन पर प्रभाव की चर्चा की जा रही है।

10.4.1 विशेषाधिकारों पर आक्रमण

क्रांति के दौरान विशेषाधिकारों पर सुनियोजित ढंग से कानूनी और सामाजिक आक्रमण किया गया जिसमें कुलीनवर्ग के विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया गया (4 अगस्त 1792)। 1792 के दौरान ग्रामीण इलाकों में हिंसा की वारदातें हुईं। 10 अगस्त 1792 को यह निर्णय लिया गया कि सभी प्रकार के जमींदारी अधिकारों से लेकर नकद बकायों (राजस्व व कर) तक को चार्टर (लिखित प्रमाण पत्रों) द्वारा प्रमाणित करना होगा, इससे आक्रमण और भी तीव्र हुए। 1792-94 के दौरान देश में हुए आंतरिक टकराव से यह आक्रमण और तेज हुआ। इन गतिविधियों से अमीर किसानों की समृद्धि बढ़ी और इससे ग्रामीण इलाकों में सम्पत्ति का जबरदस्त पुनर्वितरण हुआ।

कुलीनवर्ग की समाप्ति और उनकी जमीनों को जब्त कर बेच देने से सम्पत्ति के पुनर्वितरण को नया आयाम मिला; हालांकि यह वितरण किसी भी मामले में समानता के सिद्धांत पर आधारित नहीं था। इस बिक्री से प्रमुखत: धनी किसानों और बुर्जुआ वर्ग के लोगों को फायदा हुआ जो जमीन में अपना पैसा लगाना चाहते थे। पुरातन व्यवस्था के परम्परागत करों, (जैसे टेले, कैपिटेशन और विन्जटिमे) जिसकी अदायगी प्रमुख रूप से किसानों और बुर्जुआ वर्ग के लोगों को करनी पड़ती थी, को समाप्त किए जाने से किसानों की आय में तात्कालिक वृद्धि हुई। औद्योगिक उद्यम के क्षेत्र में पुराने ढर्रे की श्रेणियों पर प्रतिबंध लगाने से अभिनव प्रयोग और खोज का रास्ता प्रशस्त हुआ।

10.4.2 युद्ध का प्रभाव और क्षेत्रीय विस्तार

कराधान के पुनर्गठन के परिणामस्वरूप राजस्व में कमी आई और पुरातन व्यवस्था के दिवालिएपन के कारण राज्य की वित्तीय व्यवस्था चरमरा गई। परिणामस्वरूप 1789-97 के बीच मुद्रा स्फीति तेजी से बढ़ी जिसके कारण औद्योगिक पूंजी के अधिकांश लाभ समाप्त हो गए। क्रांतिकारी युद्धों में काफी लोगों की जानें गईं; श्रमिक आधारित अर्थव्यवस्था में श्रमिकों की उपलब्धता निर्णायक होती है। उत्पादकों ने इंगलैंड से मशीन का आयात कर अपनी इस समस्या का सामाधान करना चाहा परंतु फ्रांस और ब्रिटेन के बीच पनपी दुश्मनी के कारण यह मामला भी खटाई में पड़ गया। 1797 के बाद नेपोलियन के नेतृत्व में फ्रांस के राज्य विस्तार से इस स्थिति पर काफी कुछ काबू पाया गया। साम्राज्य विस्तार से न केवल देश की आय बढ़ी और इसकी मुद्रा विजित देशों में भी चलने लगी बल्कि साइसेलपाइन रिपब्लिक, हेलवैशियन रिपब्लिक, बाटावियन रिपब्लिक और इतालवी राज्य, हॉलैंड राज्य और जर्मनी स्थित नेपोलियन के राज्यों में फ्रांसीसी माल बेचा जाने लगा। 1806 के बाद यूरोप पर महाद्वीपीय प्रणाली (इंगलैंड के माल को फ्रांसीसी प्रभुत्व के क्षेत्रों में आने से रोकना) आरोपित किए जाने से फ्रांसीसी उत्पादकों को और भी मदद मिली। नेपोलियन ने येन केन प्रकारण इंगलैंड से मशीनें प्राप्त करने का प्रयास किया। जिस समय नेपोलियन प्रशासन अपने उत्कर्ष पर था उस समय ब्रिटेन में बने मालों

को महाद्वीप (यूरोप) के बाजारों में आने नहीं दिया गया जिससे फ्रांसीसी उत्पादकों की चांदी हो गई। परंतु इसका नुकसान यह हुआ कि ब्रिटेन द्वारा यूरोपीय बंदरगाहों को घेर लेने और बॉडेक्स जैसे एटलांटिक प्रमुख केंद्रों के ढहने से अमेरीकी बाजार हाथ से छूट गया। इसके अलावा इंगलैंड में हुए विभिन्न प्रयोगों और खोजों का लाभ फ्रांसीसी उद्योग को नहीं मिल सका जो अन्यथा उसको मिल सकता था। इसलिए 1814 के बाद फ्रांस पिछड़ गया और यूरोप में एक बार फिर से ब्रिटिश मालों का धड़ल्ले से उपयोग होने लगा।

10.4.3 पुनर्स्थापित (बोर्बन) और औरलिएन राजतंत्रों (1815-48) द्वारा संरक्षणवाद और इसके परिणाम

नेपोलियन युद्धों की समाप्ति के बाद यूरोपीय बाजारों में इंगलैंड में बनी सस्ती वस्तुओं की भरमार लग गई जिससे फ्रांस में बनी वस्तुओं की मांग तेजी से घटी और यहां के उत्पादक दिवालिएपन की कगार पर पहुंच गए। तब देश की सरकार ने (लुई XVIII और चार्ल्स X के अधीन) राष्ट्रीय उद्योगों को 'संरक्षण' देने के लिए नेपोलियनयुगीन और क्रांति से पूर्व की नीतियों को जारी रखा। दिसम्बर 1814 के कर नियमों के द्वारा विदेशी वस्तुओं पर ऊंचे शुल्क लगाए गए। मलमल, सन और लोहे पर काफी शुल्क बढ़ा दिया गया (पहले के मुकाबले इसमें 10 % से लेकर 50 % तक की वृद्धि की गई)। सूत से बने सामानों के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया गया और आनाज के आयात पर विशेष कर लगाया गया। फ्रांस के उपनिवेशों में विदेशियों के साथ सभी प्रकार के व्यापारों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। वस्तुओं के परिवहन और यातायात के लिए केवल फ्रांसीसी जहाजरानी के उपयोग का निर्देश जारी कर दिया गया और फ्रांसीसी उद्योग को एकाधिकार देने के लिए कच्चे माल (जैसे चाशनी) के परिशोधन पर प्रतिबंध लगा दिया गया। फ्रांसीसी व्यापारिक जहाजों को कई प्रकार के लाभ प्रदान किए गए। पुनर्स्थापित बोर्बोन राजतंत्र के प्रथम वित्त मंत्री बैरोन लूई ने इस नीति की शुरुआत की और इसे चार्ल्स गैनिल्ह, एफ.एल.ए.फेरियर और लूई से, जैसे महत्वपूर्ण सिद्धांतकारों का समर्थन प्राप्त हुआ।

इन उपायों के परिणामस्वरूप स्पष्ट रूप से फ्रांसीसी उत्पादकों के लिए राष्ट्रीय बाजार को 'संरक्षण' प्रदान किया गया। परंतु विदेशी व्यापार करने वाले व्यापारियों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा क्योंकि ब्रिटेन में बने सस्ते माल का वे मुकाबला नहीं कर पाते थे। इन परिस्थितियों में ब्रिटेन से मशीनों का आयात अनिवार्य हो गया। इन मशीनों का आयात काफी महंगा पड़ रहा था जिसके कारण इस मसले पर 1828 तक आते-आते कई हलकों से संरक्षणवादी शुल्क की आलोचना होने लगी। हालांकि ब्रिटिश प्रतियोगिता के भय से मुक्त व्यापार की दिशा में कोई बड़ा कदम उठाने का प्रयास नहीं किया गया।

ओरलिएन राजतंत्र के दौरान उद्योग के विकास के कारण संरक्षण में छूट देने की मांग जोर पकड़ने लगी। देश के संरक्षित बाजार के भीतर इस विकास के लिए प्रौद्योगिकी सुधार और मुनाफा बढ़ाने के लिए सस्ते आयात का उपाय ढूंढा जाने लगा। संरक्षण में छूट देने के प्रमुख प्रवक्ता फ्रेडरिक बैस्टियात (1801-1850) थे जिन्होंने एसोसिएशन पोर ला लिबरेते डेस एशेन्जसे (1845) (मुक्त व्यापार संगठन), की स्थापना की जिसकी शाखाएं बोर्डेक्स, पेरिस, मार्सिल्स, ले हार्वे और रीम्स में भी खोली गईं। उनके विचार जरनल डेस एकनौमिस्टेस्ट (1841 में स्थापित) में प्रकाशित हुए। मुक्त व्यापार की मांग के साथ-साथ कॉम्टे, प्रूधों और लूई ब्लां के विचार सामने आए कि बाजार की शक्तियों पर राज्य का नियंत्रण होना चाहिए। परंतु इससे कोई विरोध की स्थिति उत्पन्न नहीं हुई। इस अवधि में मुक्त व्यापार की ओर लोगों का झुकाव अधिक बढ़ा।

1830 और 40 के दशक में होने वाली औद्योगिक उन्नति ने इस प्रवृत्ति को और आगे बढ़ाया। नौरमेंडी और अल्सास में कपड़ा उद्योग के बढ़ते मशीनीकरण के कारण भी यह उन्नति हुई। अल्सास में यह विकास तेजी से हुआ। एक अनुमान के अनुसार 1828 में नए कताई उद्योग में 5,00,000 तकलियों पर सूत का उत्पादन था जो 1874 में बढ़कर लगभग 1,150,000 हो गया। इस अवधि में ऊर्जा से चलने वाले करघे का व्यापक रूप में इस्तेमाल होने लगा। बेल्जियम सीमाप्रांत और ऊपरी ल्वार प्रांत के परम्परागत केंद्रों में कोयला केंद्रों का तेजी से प्रसार हुआ। लोहा उद्योग में 1826 और 36 के बीच मैनबाई, विलसन एंड कम्पनी जैसी इंगलिश कम्पनियों द्वारा बनाए गए इंगलिश मशीनों से में ले क्रुशोट में सुधार हुआ और अन्ततः शेन्डर्स ने इसमें काफी हद तक सुधार किया। फार शम्बोल में एम. डुफाद, जिसे इंगलैंड की प्रविधि का काफी ज्ञान था, के अनुभवों को अपनाया गया। 1822 के बाद साझेदारी में इसका काफी प्रयोग किया गया और डिकेजेविले (सुदूर दक्षिण) में भी उत्पादन में काफी वृद्धि हुई।

1837 में सोसाइटिज एन कमांडिटीज नामक समितियों की स्थापना हुई जो सीमित जिम्मेदारी के सिद्धांत पर आधारित थी। इसकी स्थापना बैंकर लेफिटे ने कैसिए जेनेरल डु कॉमर्स एट डे लॉ इन्डस्ट्री के माध्यम से की थी। इसके बाद से उद्योग में पूंजी का आगमन तेजी से बढ़ा। 1842 के बाद रेलवे में निवेश तेजी से बढ़ा और इसमें काफी मात्रा में पूंजी निवेशित की गई। सरकार ने निजी रेलवे निर्माताओं को जमीन दी। इसके लिए डुफाउरे कानून के अन्तर्गत कम्पनियों को निर्माण सामग्री जुटाने की गारंटी देनी होती थी। इस काम में इन समितियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और रेलवे कम्पनियों में पूंजी निवेश को आकर्षित किया और इसके लिए पूंजी जुटाई। पूंजी के परम्परागत स्रोतों ने भी इस पथ का अनुसरण किया और औद्योगिक विकास में सहयोग दिया। इसके अलावा 1848 तक आते-आते पेरिस के, रोथ्सचाइल्ड्स जैसे 'कंजरवेटिव' बैंकरों ने भी उद्योग में पूंजी निवेशित की।

अभी भी अधिकांश उत्पादन छोटी इकाइयों में ही हो रहा था और 1848 तक संरक्षण लोकप्रिय बना रहा। इस समय तक उत्पादन जल शक्ति पर आधारित था जिसकी उत्पादन क्षमता अपेक्षाकृत कम थी। 1815-1848 की अवधि में चारकोल अग्नि भट्ठियों की संख्या बढ़ी और उनकी संख्या 1839 तक बढ़ती रही क्योंकि यहां इंधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध था जबकि इंगलैंड में ऐसी स्थिति नहीं थी। इंगलिश शैली के उत्पादकों का उत्पादन तेजी से बढ़ा। इनके यहां रोजगार भी बढ़ा और यहीं सबसे ज्यादा पूंजी निवेशित की गई। परंतु यह कहा जाता है कि प्रथम रेलवे लाइन फ्रांसीसी गृह उत्पादन के बल पर नहीं बिछाई जा सकती थी और लोहे के उत्पादन के साथ-साथ काफी मात्रा में पटरियों का आयात इंगलैंड से करना पड़ा। 1848 तक देश की अधिकांश औद्योगिक इकाइयां जल शक्ति से चलती थीं हालांकि खासकर कोयला उद्योग में वाष्प शक्ति के उपयोग में काफी वृद्धि हुई थी। जॉन क्लैपहेम के अनुसार 1839 में इंगलिश वस्त्र उद्योग 1641 वाष्प इंजन और 674 जल इकाइयों का उपयोग कर रहा था, जबकि कुछ समय बाद फ्रांस में 243 वाष्प और 462 जल संयत्र काम कर रहे थे। 1839 में इंगलैंड के कपड़ा मिलों में वाष्प चलित मशीनों की संख्या 1848 में फ्रांस के सभी उद्योगों में प्रयुक्त वाष्प मशीनों से अधिक थी।

10.5 औद्योगिक पूंजीवाद 1848-70

1848 में हुई क्रांतियों के बाद के काल में पूरे यूरोप में सोने की उपलब्धता, और लगभग 1860 तक रेलवे में हुए तीव्र विकास के कारण कपड़ा, कोयला और रेलवे जैसे प्रमुख विकास के क्षेत्रों में फ्रांस में भारी पूंजी का निवेश संभव हुआ। इसके परिणामस्वरूप जल शक्ति के स्थान पर वाष्प शक्ति का इस्तेमाल किया जाने लगा और लौह उत्पादन के लिए चारकोल के स्थान पर कोयले का उत्पादन होने लगा। इस अवधि में नॉर्ड और पास डे कैलेस के कोयला खदानों से खूब कोयला निकाला गया जो इस समय इंधन का प्रमुख स्रोत हो गया था, हालांकि यह प्रगलन (लोहे को गलाने) के लिए बहुत उपयोगी नहीं था क्योंकि इससे कोक नहीं निकलता था। 1852 में कोयले का कुल राष्ट्रीय उत्पाद् 5,000,000 मेट्रिक टन था जिसमें 1,000,000 मेट्रिक टन का उत्पादन नार्थ बेसिन से, अपर लॉयर से 1,640,000 मेट्रिक टन, ले क्रेसाट और ब्लेन्जी से 400,000 मेट्रिक टन तथा शेष अन्य छोटे खदानों से निकाला जाता था। 1869 में राष्ट्रीय उत्पादन 13,000,000 मेट्रिक टन था जिसमें उत्तरी हिस्से में 4,300,000 और अपर लॉयर में 3,100,000 कोयले का उत्पादन होता था। अन्य स्थानों में लौह पिंड का उत्पादन तेजी से बढ़ा (1853 में 600,000 टन से बढ़कर 1869 में 1,400,000 टन हो गया); बेसेमर प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हुए 1869 में इस्पात उत्पादन 1,000,000 टन हो गया और अन्तरराष्ट्रीय उत्पादन में ब्रिटेन के बाद इसका दूसरा स्थान हो गया। उत्पादन के मुख्य केंद्र सेंटएटिने (टेरे न्वायर कम्पनी और पेटेन गाउडेट का उद्यम), ले क्रेसॉट (श्नेडर उद्यम), लॉरिन में (डि वेन्डलस के विभिन्न उद्यमों में) और, अल्सास में निदरब्रौन में (डिटरिच उद्यम में) स्थित था। कमेंट्री और फोरशेम्बॅल्ट (बेल्जियन सीमा पर) और उत्तर में ऐंजिन और डेनेन स्थित कम्पनियों में लोहे का उत्पादन होता था।

सूती उद्योग में, नॉरमेंडी और लिले जिले में (जहां 1860 के दशक तक तथा उसके बाद भी कताई होती थी) उत्पादन यथावत रहा परतु 1870 तक आते-आते अल्सास में सूती उद्योग का मशीनीकरण और परिष्करण लैंकशायर के स्तर तक पहुंच गया। अल्सास में ऊर्जा से चलने वाली मशीनों का विकास किया गया जो इंगलैंड की मशीनों का मुकाबला कर सकती थी; जो बात सूती कपड़ा उद्योग पर लागू होती थी वही ऊनी कपड़ों पर भी लागू होती थी क्योंकि उस समय इस उद्योग का विस्तार आस्ट्रेलियाई कच्चे ऊन के आयात पर निर्भर करता था।

इस अवधि में उत्पादन में हुई वृद्धि पर अन्तरराष्ट्रीय परिस्थितियों का तो प्रभाव पड़ा ही परंतु इस अवधि में द्वितीय साम्राज्य के तहत बोनापार्टिस्ट राज्य के हस्तक्षेप से इस दिशा में तीव्र प्रगति हुई। नेपोलियन III के सेंट साइमोनियन सिद्धांतों से उत्पादन वृद्धि को प्रोत्साहन मिला। इसी दौरान क्रेडिट फोन्सियर (एक राष्ट्रीय बंधक बैंक) और क्रडिट मोबिलियर (पेरियर बंधुओं के ज्वाइंट स्टॉक बैंक) की स्थापना सरकार द्वारा की गई। दोनों बैंकों की स्थापना नेपोलियन के राष्ट्राध्यक्ष (प्रेसिडेंट) बनने के तुरंत बाद हुई और इन दोनों बैंकों ने अपने मुनाफे को बड़ी ही कुशलता से उद्योगों में निवेशित किया। इन दो बैंकों की सफलता के कारण 1850-57 के बीच कई बैंक खुले जिनमें क्रेडिट ल्वायनिस सर्वाधिक प्रसिद्ध था। गेरशेनक्रोन ने बताया है कि इन राज्य-प्रायोजित या राज्य-प्रोत्साहित बैंकों के कार्यकलापों ने रोथ्सशिल्ड्स जैसे कई 'कंजरवेटिव' बैंकिंग घरानों को भी औद्योगिक बैंकिंग क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए आकर्षित किया जो अभी तक सरकारी बैंकों और भूमि बंधकों तक ही सीमित है। अत: इस युग में राज्य के सक्रिय सहयोग के कारण ही आर्थिक विकास हुआ। इस युग में मुक्त व्यापार की दिशा में कॉबडेंट ट्रीटी जैसे छिटपुट कार्य भी हुए जिसमें कुछ लोगों को प्रसन्न करने के लिए (जिनका उल्लेख पिछले भाग में किया जा चुका है) इंगलैंड से सामान के निर्यात के लिए कई आयात शुल्कों में रियायात दी गई। सरकार के इस सक्रिय सहयोग की तुलना अठारहवीं शताब्दी के अंत में ब्रिटिश सरकार की सक्रियता से नहीं की जा सकती क्योंकि वे अधिक प्रभावकारी थे और इनकी दिशा भी बेहतर ढंग से नियोजित की गई थी। हालांकि इन प्रयासों में प्रबंधकीय कमी थी परंतु यह महत्वपूर्ण था और इसका प्रभाव अभूतपूर्व था।

10.6 औद्योगिक पूंजीवाद का विकास 1871-1914

फ्रांस-प्रशा युद्ध (1870-1871) में फ्रांस की हार के बाद कई दशकों तक आमतौर पर यही समझा जाता रहा कि यह देश अवनति के गर्त में चला गया है। हालांकि जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका (जहां उत्पादकता में तीव्र गति से वृद्धि हुई थी और जहां जनसंख्या में तेजी से विकास हुआ था) से इसकी तुलना करने के कारण यह धारणा बनी थी। परवर्ती काल से तुलना करने पर पता लगता है कि 1870-1914 के मुकाबले 1815-1870 में उद्योग और कृषि की वृद्धि दर ज्यादा थी।

इस समय और इसके बाद फ्रांसीसी अर्थव्यवस्था में हुए परिवर्तनों और औद्योगिक और वित्तीय पूंजीवाद के मजबूत होने के महत्व को टीकाकारों ने कम करके आंका। कृषि और वानिकी में लगे श्रम बल का प्रतिशत 1870 में 53 % था जो 1913 में घटकर 37.4 % हो गया। श्रम की उत्पादकता बढ़ती रही और राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि हुई (1895 तक यह धीरे-धीरे बढ़ी: 1896-1913 में यह वृद्धि प्रतिवर्ष 1.8 % थी)। प्रतिव्यक्ति निर्यात और आयात मूल्य में दोगुना वृद्धि हुई । देश की बचत बढ़ी और देश के बाहर उद्यमों में पूंजी निवेश में भारी मात्रा में वृद्धि हुई। इस आर्थिक विकास में पश्चिम अफ्रिका और हिन्द चीन (दक्षिण पूर्व एशिया) में स्थापित फ्रांसीसी उपनिवेशों का योगदान भी शामिल था।

निम्नलिखित आंकड़ों से औद्योगिक वृद्धि के आम संकेतों का उल्लेख किया जा रहा है :

फ्रांस में विशिष्ट उद्योगों की उत्पादन वृद्धि की औसत वार्षिक दर

अवधि	लोहा और इस्पात	कोयला	कपड़ा
1860-92	2.58	3.24	1.52
1892-1913	4.01	2.04	1.92

(स्रोत : एस.बी. सॉल और ए. मिलवार्ड, **द डेवेलप्मेंट ऑफ द इकोनोमिज़ ऑफ कान्टिनेंटल यूरोप 1977**)

इसके अलावा यहां यह भी उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि इस समय फ्रांस में रसायनों के उत्पादन और बिजली उद्योगों के क्षेत्र में पर्याप्त शोध और विकास हुए। इस समय जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका में भी इस क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहा था। सोडा और सल्फ्यूरिक एसिड के उत्पादन के लिए नई खोज की गई (सोडा बनाने की सॉल्वे पद्धति) और सेंटडेरिस कम्पनी ने रंग-सामग्री अनुसंधान और उत्पादन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां अर्जित की। बिजली के क्षेत्र में थॉमस-हटसन और सिमेंस जैसी अमेरिकन और

जर्मन कम्पनियों ने फ्रांस में उत्पादन शुरू किया जबकि फ्रांसीसी कम्पनी ब्रेगट ने टेलीग्राफ और टेलीफोन उपकरणों के निर्माण में बढ़त हासिल की। इसी समय अल्यूमुनियम के उत्पादन के लिए हेरॉल्ट ने एलोक्ट्रोलाइसिस पद्धति की खोज की जो उस समय की महत्वपूर्ण खोज थी। मोटर कार उत्पादन के लिए बिजली के उत्पादों का उपयोग किया जाने लगा। फ्रांस की पेनहर्ड और पीजॉट, कम्पनियां जर्मनी की ओट और बेंज कम्पनियों से मुकाबला करने लगी और 1900 तक आते-आते ये कम्पनियां फोर्ड से भी प्रतिस्पर्द्धा करने लगीं।

1871 में अल्सास और लॉरेन पर जर्मनी का कब्जा हो गया और यह फ्रांस के हाथ से निकल गया। आरंभ में ऐसा लगा कि फ्रांसीसी औद्योगिक पूंजीवाद के लिए यह बहुत नुकसानदेह साबित होगा परंतु बाद में ऐसा नहीं हुआ। निश्चित रूप से अल्सास में कपड़े के क्षेत्र में हुए अभिनव प्रयोग का लाभ जर्मनी को मिल रहा था। इसका फायदा मुख्य रूप से जर्मनी को ही मिल रहा था परंतु लॉरेन में फ्रांसीसी निर्माणकर्ताओं और अन्य फ्रांसीसी कम्पनियों के बीच सम्पर्क बना रहा। लौरेन के बड़े इस्पात और लौह उत्पादकों डे वेन्डेल्स, और श्नेडर की ले केसट कम्पनी के बीच सहयोग बने रहने के कारण सीमा के दोनों ओर इस्पात बनाने के लिए थॉमस गिलकाइस्ट पद्धति का इस्तेमाल किया जाने लगा जबकि 1878 से लेकर 1895 तक इस पद्धति पर डे वेन्डलस के अधिकार सुरक्षित थे।

बोध प्रश्न 1

1) इतिहासकार टॉम केम्प ने फ्रांस में मंद औद्योगिक विकास का प्रमुख कारक क्या बताया है ?

....
....
....
....
....
....

2) फ्रांस में व्यापार और निर्माण को आरंभ में किन प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा ?

....
....
....
....
....
....

3) 'विशेषाधिकारों पर आक्रमण' का क्या प्रभाव पड़ा ?

....
....
....
....
....
....

4) औरलिएन राजतंत्र के दौरान 'संरक्षणवाद' में ढील दिए जाने की मांग क्यों उठाई गई ?

....
....
....
....
....

....

....

5) नेपोलियन III ने उद्योग के विकास को किस प्रकार प्रोत्साहित किया ?

....

....

....

....

....

....

6) 1871 में जर्मनी के हाथों अल्सास और लॉरेन के हार जाने का फ्रांस पर क्या प्रभाव पड़ा ?

....

....

....

....

....

....

....

10.7 जर्मनी

1871 तक जर्मन राज्य और उसके बाद जर्मन साम्राज्य अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में औद्योगिक पूंजी के विकास का अन्य प्रमुख केंद्र था। अठारहवीं शताब्दी के दौरान जर्मन क्षेत्रों में औद्योगिक कार्यकलाप मुख्य रूप से कारीगर अथवा शिल्पी, श्रेणि और पुटिंग आउट व्यवस्था पर आधारित था। कृषि क्षेत्रों में भी नए प्रयोग किए गए (खासकर राइन घाटी में), हालांकि कई कारणों से आर्थिक विकास अपेक्षित गति से नहीं हो सका। अठारहवीं शताब्दी के दौरान कुछ क्षेत्र में श्रम की उपलब्धता बहुत कम थी क्योंकि उस समय युद्ध में काफी लोगों की मौत हो रही थी (आस्ट्रिआई उत्तराधिकार युद्ध और सप्तवर्षीय युद्ध)। इसके अलावा जर्मन राज्यों में उत्पादकों को सुगठित बाजार भी प्राप्त नहीं था क्योंकि हर राज्य अपने कर और शुल्क लगाता था और एक राज्य से दूसरे राज्य में माल ले जाने के लिए शुल्क की अदायगी करनी पड़ती थी। अठारहवीं शताब्दी में होली रोमन साम्राज्य भी इस दिशा में बहुत सुधार न कर सका और न ही 1815 के बाद 'जर्मनवाद' इस दिशा में कोई खास प्रगति कर सका। जर्मनी में विभिन्न प्रकार के 300 राज्य थे। इनमें राज्यों के आकारों में विभिन्नता थी। इसके अलावा कोयले और लोहे की गुणवत्ता भी एक प्रमुख समस्या थी (ब्रिटेन से यहां स्थिति बिलकुल अलग थी, और यहां कोयला बनाने की पद्धति के विकास ओर पलटनी प्रक्रिया के विकास से अपेक्षित लाभ नहीं उठाया जा सकता था)। इस क्षेत्र के पूर्वी हिस्से में सर्फ प्रथा (कृषि दास प्रथा) के कारण मजदूरों की आवाजाही काफी प्रतिबंधित थी। ब्रिटेन से भिन्न यहां भी फ्रांस की ही तरह पूंजी की आपूर्ति केवल शक्तिशाली व्यापारियों और उत्पादकों के धनों तक सीमित थी और पूंजी की उपलब्धता के लिए कोई व्यापक व्यवस्था मौजूद नहीं थी। एक और समस्या यह थी कि जर्मन राज्यों में पितृसत्तात्मकवाद ने अभावग्रस्तता को रोकने के लिए बाहर से आने वाले लोगों को रिहायशी अधिकार देने पर प्रतिबंध लगा रखा था और वे श्रेणि व्यवस्था का समर्थन करते थे। इस कारण श्रमिकों के आवागमन में बाधा पहुंची। अन्तर-क्षेत्रीय उद्यम का विकास नहीं हो सका।

1800 के दशक में सर्फों (कृषि दासों) की मुक्ति, 1830 के दशक में जॉलवेरिन (प्रशा स्थित सीमा शुल्क संघ), 1848-49 में पितृसत्तावाद नियमों की समाप्ति और 1850 के दशक में फ्रांसीसी तरीके के संयुक्त स्टॉक बैंकों के निर्माण के बाद उपर्युक्त वर्णित समस्याएं अपने आप कम हो गईं। इन विकासमूलक गतिविधियों के कारण उन्नीसवीं शताब्दी के बीच के दशकों में औद्योगिक उछाल की आधारभूमि निर्मित हुई और जर्मन साम्राज्य के गठन के बाद इसी आधारभूमि पर औद्योगिक पूंजी का विधिवत विकास हुआ।

10.7.1 अठारहवीं शताब्दी में कृषि

आस्ट्रिआई उत्तराधिकार के युद्ध और सप्तवर्षीय युद्ध के कारण मध्य और पूर्व के अधिकांश जर्मन राज्यों में कृषि का उत्पादन और उत्पादकता बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। फसल नष्ट हो गई, पशुधन नष्ट हुआ और मानव शक्ति का ह्रास हुआ। आस्ट्रिआई युद्ध के पहले और युद्ध अन्तराल के बीच में कृषि में जो कुछ भी विकास हुआ था वह युद्ध के दौरान काल का ग्रास बन गया। 1756 के बाद ही कृषि उत्पादन में बिना किसी बाधा के उन्नति हो सकी। इस समय के आंकड़ों को देखने से साफ पता चलता है कि इस समय अतिरिक्त भूमि कृषि के अधीन आई और युद्ध की विभीषिका से नष्ट क्षेत्रों में प्रवासियों की बस्तियां बसाई गई। प्रशा के फ्रेडरिक II ने शाही जमीनों पर उन्हें बसाया और खेती करने के व्यापक अधिकार प्रदान किए। इसी समय बाल्टिक तट की दलदल भूमि पर मुक्त किसानों की बस्तियां बसी हुई थीं। इसके साथ-साथ उत्तरी जर्मनी के मैदानी इलाकों में भी वन उपनिवेश बसाए जाने थे।
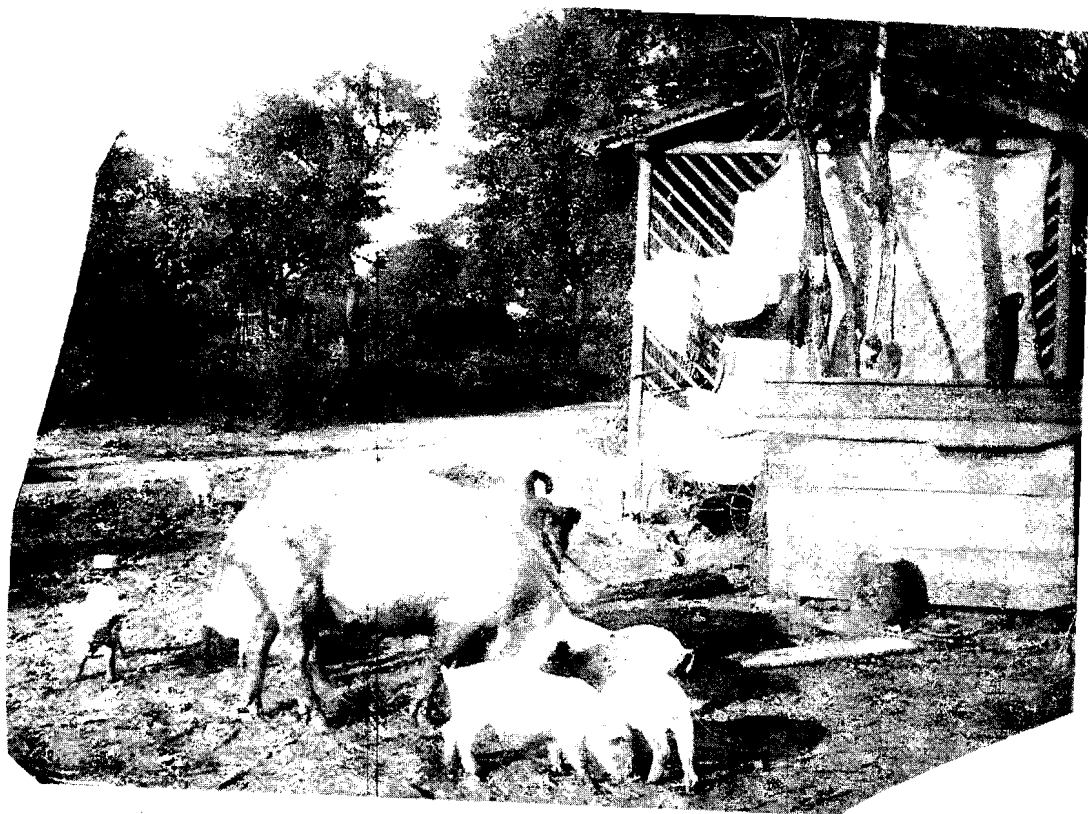
चित्र 2 : जर्मनी का एक छोटा खेत 1897

जर्मन राज्यों के उत्तरी क्षेत्रों में जिसका अधिकांश हिस्सा प्रशा के अधीन था, की कृषि व्यवस्था पर सर्फडम (कृषि दास प्रथा) की संस्था का नियंत्रण था। सप्तवर्षीय युद्ध के बाद इस संस्था ने यह कोशिश की कि खेती लगातार होती रहे और इसमें बाधा न हो। इस संस्था ने मैनोर के प्रमुख भूमिपतियों (जंकर, या रिटेर्सगट्सबेजिटज़र) के हाथों में भूमि का स्वामित्व सौंप दिया और ऐसी व्यवस्था की कि उस भूमि पर बसे हुए किसान अपने जंकर की अनुमति लिए बिना इलाका नहीं छोड़े। इन नियमों को न मानने वाले भगोड़ों से बड़ी ही कुशलता से निपटा जाता था और उनकी जमीन जब्त कर ली जाती थी। परंतु जमीन छोड़कर भागने की घटना बहुत कम ही होती थी क्योंकि जंकर कुशल और कर्मठ किसानों को उदारतापूर्वक खेती करने का अधिकार दिया करते थे। जंकरों ने किसानों को तीन कोटियों में विभाजित कर रखा था .. i) जो खेत जोतने के लिए पशु रखते थे (स्पैन्नफाहिग) ii) जो व्यवस्थित रूप से खेती किया करते थे (कोसूथ) और iii) जो कई प्रकार के कार्य करते थे (जैसे कॉटर या हॉसलर)

हालांकि अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उत्पादन वृद्धि का कारण मात्र नई भूमि पर कृषि नहीं था नदी घाटियों की बस्तियों (मौसेल, मेन, नेकर और राई) तथा पश्चिम और दक्षिण पश्चिम के प्रमुख इलाकों में यह उन्नति

हुई। यहां के स्वामित्व की तुलना फ्रांस से की जा सकती है। मसलन इस पर कुलीनवर्ग का अधिकार था परंतु किसानों को एक निश्चित समय के लिए काश्तकारी दी जाती थी और कई क्षेत्रों में अधिकार उत्तराधिकार में भी मिल जाते थे। दक्षिण पश्चिम के किसानों की तुलना फ्रांस के सेंसियर्स से की जा सकती है।

10.7.2 अठारहवीं शताब्दी में उद्योग और व्यापार

जर्मन राज्यों के कई क्षेत्रों में अठारहवीं शताब्दी के दौरान पुटिंग आउट और श्रेणि संगठन के आधार पर लघु उद्योगों का विकास हुआ। ये विकास मुख्य रूप से बर्निल, राइनलैंड और सिलेसिया (प्रशा राज्य क्षेत्र में) और सैक्सोनी जैसे प्रमुख औद्योगिक केंद्रों में हुए। प्रशा में औद्योगिक विकास में राज्य ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और लगभग 1720 से लेकर 1790 तक सरकार ने उद्योगों के प्रबंधक के रूप में कुशल व्यापारियों की नियुक्ति की। राजा ने कटलरी (छुरी, चम्मच कांटे आदि), चीनी परिशोधन, धातु और युद्ध सामग्री जैसे उद्योगों की ओर विशेष ध्यान दिया। बर्लिन के डॉम और स्पिलटगरबर युद्ध सामग्री बनाने के प्रमुख उद्योग थे और इस प्रकार के अन्य संगठनों की भांति ये भी राज्य संरक्षण और मांग पर पूर्णतः आश्रित थे।

सिलेसिया में कम्पनियों के निदेशक मंडल की नियुक्ति राज्य करता था और इस पर उसका पूरा नियंत्रण होता था (खासकर खनन क्षेत्र में)। इन कम्पनियों पर वोन हेनिज (प्रशा औद्योगिक और खनन अभिकरण का अध्यक्ष) और ग्राफ वोन रेडेन (सिलेसिया में उद्योग का प्रभारी) का नियंत्रण था रेडेन ने पूरे ब्रिटेन की यात्रा की और इसके कुछ समय बाद सिलेसिया में पलटनी भट्टी की प्रक्रिया की शुरुआत की। इसके साथ-साथ अन्य उत्पादन इकाइयों में कोक भट्टियों का इस्तेमाल शुरु किया और फ्रेडरिशग्रब (एक सीसा संयत्र) में वाष्प चालित इंजन का इस्तेमाल किया। सिलेसिया में स्थित लोहे के कारखाने मालपाने हट (1753 में स्थापित) की देख रेख के लिए रेडेन ने प्रमुख ब्रिटिश लौह उत्पादक जॉन विलकिंसन के भाई को प्रशा बुलाया।

10.8 परिवर्तन के स्रोत

1789-1815 के बीच उठाए गए सरकारी कदमों से भी इस क्षेत्र में पूंजीवाद की प्रकृति पर निर्णायक प्रभाव पड़ा। फ्रांस के क्रांतिकारियों के प्रत्यक्ष प्रशासन वाली सरकारों या उसके आस-पास की सरकारों जैसे राइनलैंड और बाद में वेस्टफेलिया साम्राज्य में फ्रांसीसी विधान का अनुगमन किया गया। क्रांतिकारी और नेपोलियन आक्रमण का सामना करने के उद्देश्य से सामाजिक संबधों की प्रकृति में किए जाने वाले बदलावों के परिणामस्वरूप परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू हुई। महाद्वीपीय व्यवस्था और ब्रिटेन द्वारा महाद्वीप के बन्दरगाहों को अवरुद्ध किए जाने से (1806-1813) इस महाद्वीप से ब्रिटिश माल का निष्कासन हुआ और इससे लगभग सभी क्षेत्रों को फायदा हुआ।

10.8.1 क्रांतिकारी और नेपोलियन युग के विधान

सबसे पहले राइनलैंड की औद्योगिक बस्तियों में श्रेणियों को तोड़ा गया और उनके विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया गया जिससे कई उद्योगों में प्रतिस्पर्द्धाओं के स्तर में सुधार हुआ और नए प्रयोगों के लिए माहौल बना। महाद्वीपीय व्यवस्था से इस क्षेत्र के उत्पादों की मांग बढ़ी और फ्रांसीसी वसूलियों के बावजूद 1800 के दशक में ज्यूलिख, क्रेफेल्ड, आशेन, वूपर घाटी और डची ऑफ बर्ग में तीव्र औद्योगिक उछाल आया। इस संदर्भ में ट्रेकबिलकॉक का कहना है कि 1800-1807 के बीच आशेन के कई ऊन के कारखानों में 5 गुना उत्पादन बढ़ा और रूस और स्पेन को बड़ी मात्रा में ऊन निर्यात किया गया।

प्रशा में पुरानी शासन पद्धति (Ancient Regime) को बचाने के लिए क्रांतिकारी व्यवस्थाओं को अपनाया गया, कृषि दासों को मुक्त किया गया और मालिक और किसान के बीच तथा किसान तथा राज्य के बीच नया संबंध विकसित हुआ। इनके तात्कालिक प्रभाव के बावजूद 1815 में सांम्राज्य की पुनर्स्थापना के बाद प्रशा में अन्य स्थानों पर राइनलैंड की संस्थागत पद्धति के साथ-साथ श्रेणियां भी जीवित रहीं। प्रशा में कृषि दास की मुक्ति का प्रभाव सीमित होने के बावजूद निर्णायक और सर्वव्यापी था।

1807-8 मुक्ति फरमान (Emancipation Edicts, वोन स्टीन नाम के मंत्री के प्रयत्न से) के द्वारा कृषि दासों को मुक्त तो कर दिया गया परंतु जमीन पर उन्हें कोई अधिकार नहीं दिया गया। हार्डिन बर्ग नाम के एक

मंत्री की देखरेख में 1811 में और भी कई उपाय किए गए जिनके अनुसार जिन कृषि दासों को जंकर सम्पत्ति पर उत्तराधिकार का अधिकार था उन्हें अपने खेतों का एक तिहाई हिस्सा ही छोड़ना होगा, जिनके पास इस तरह के अधिकार नहीं थे उन्हें अपनी आधी जमीन छोड़नी होगी, जिनके पास बहुत थोड़ी जमीन होगी उन्हें केवल लगान देना होगा। नई व्यवस्था होने तक कृषि दासों के सम्पत्तिगत अधिकारों को निर्धारित करने के लिए पुरानी पद्धति को ही आधार बनाया गया। अन्ततः 1816 में ऐसे किसानों की सम्पत्ति के लिए कानून बनाने का निर्णय किया गया जो पशु भी पालते थे और 1850 तक सम्पत्ति संबंधी व्यवस्थाओं को नियमित करने के लिए बहुत जोर नहीं दिया गया।

जर्मनी में छोटी जोतों (Rentenbanken) के बनाने के साथ-साथ कुछ वैधानिक उपाय भी किए गए। इससे भूमिपतियों को कर भुगतान की अदायगी में रियायत दी गई और उन्हें लंबे समय में इसे अदा करने की छूट दी गई। 1816 के बाद और उसके आस-पास खेती में मंदी आने के कारण मांग में गिरावट आई और इस प्रकार कुछ भूमियों का हस्तांतरण एक हाथ से दूसरे हाथ में हुआ। मुक्ति आदेश से अब ज्यादा से ज्यादा लोग जमीन खरीद बेच सकते थे क्योंकि इसमें बड़े काश्तकार और दूसरे लोगों (जो अभी तक कृषि दास थे और अभी तक जमीन नहीं खरीद सकते थे) को जमीन खरीदने का अधिकार मिला। इसके अलावा कृषि का वाणिज्यिकरण हुआ जो पहले संभव नहीं था। मंदी समाप्त हो जाने के बाद कृषि के वाणिज्यिकरण से पूर्वी प्रदेशों में कृषि क्षेत्र में उन्नति हुई।

10.8.2 जोल्वेरिन

1815 के बाद 1820 के दशक के आर्थिक विकास में बड़े क्षेत्रीय बाजारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1834 में प्रशा में जोल्वेरिन (सीमा शुल्क संघ) की स्थापना के पहले इस बदलाव से जर्मन राज्यों में उत्पादित वस्तुओं के वितरण की कई समस्याओं और बाधाओं का समाधान हो सका। अभी तक इन्हीं बाधाओं के कारण इन क्षेत्रों में औद्योगिक पूंजीवाद का उदय नहीं हो सका था क्योंकि यहां के उत्पादक अपने माल या तो संरक्षित फ्रांसीसी बाजार में बेच सकते थे या उन्हें बाजार में अंग्रेजी माल की प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ता था। इन परिस्थितियों में निम्नलिखित क्षेत्रीय इकाइयां निर्मित की गईं।

क) प्रशा के बाजार में 1818 के सीमा-शुल्क के तहत कच्चे मालों पर कम शुल्क लगाया गया। चाय और कॉफी जैसे 'औपनिवेशिक मालों' पर ज्यादा शुल्क लगाया गया (20 %), उत्पादित वस्तुओं पर कम शुल्क लगाया गया (10 %) और वस्तुओं के आने जाने पर ज्यादा शुल्क लगाया गया।

ख) बवेरिया और वर्टेमबर्ग में साउथ जर्मन लीग की स्थापना की गई (1928)

ग) सेंट्रल लीग बनाया गया (सेक्सोनी, हैनोवर, थरिंजियन स्टेट, कोबर्ग और हेंसे)

घ) प्रशा की भौगोलिक स्थिति काफी लाभप्रद थी (पोलैंड और रूस जाने वाले राज्य मार्ग इसके क्षेत्र से गुजरते थे और फ्रैंकफर्ट तथा लिपजिग जैसे महत्वपूर्ण शहर इस मार्ग पर स्थित थे। निचले राइन के दोनों किनारे भी इसके नियंत्रण में थे)। अपनी इस भौगोलिक स्थिति का फायदा उठाकर प्रशा ने1834 के बाद से दूसरे राज्यों से सीमा शुल्क समझौता करने का आग्रह किया ताकि एक बड़ा बाजार बनाया जा सके। हेन्से टाउन्स, हैनोवर, होल्सटीन, मैकलेनबर्ग और ओल्डेनबर्ग को छोड़कर सभी राज्य 'जोल्वेरिन' में शामिल हुए। सभी सदस्य राज्यों में प्रशा के 1818 के सीमा-शुल्क (कुछ छोटे मोटे संशोधनों के साथ) को लागू किया गया।

10.8.3 रेलवे

व्यापार समझौतों की इस व्यवस्था के अंतर्गत जर्मन राज्यों में रेलवे के विकास के कारण सिलेसिया और राइनलैंड में लोहा और कोयला उत्पादन में नए प्रयोग किए गए जिससे उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई। रेलवे लाइनों के निर्माण के कारण घरेलू बाजार का विस्तार हुआ जो अभी तक राइन, एलबे और ऑडर नदियों और उनसे जुड़ी नहरों तक सीमित था।

1830 के दशक में रेलवे निर्माण शुरू हुआ। इस संदर्भ में प्रशा और सेक्सोनी में व्यापक विचार विमर्श हुआ। फ्रेडरिक लिस्ट और फ्रेडरिक हारकोर्ट ऑफ वेटर अपने समर्थकों के साथ रेलवे निर्माण का समर्थन कर रहे थे और प्रशा के राजा के सलाहकार क्रिश्चन वोन रोथर और उनके साथी इसका विरोध कर रहे थे। प्रशा

में निजी क्षेत्र ने रेलवे लाइन बिछाने में मुख्य भूमिका निभाई। ये लाइनें 1838, 1840, 1841, 1843, 1848 में बिछाई गईं। जबकि बावेरिया और बैडेन में राज्य ने रेलवे का निर्माण किया। 1850 तक 3660 मील लंबी लाइन बिछ चुकी थी और इसके बाद भी यह कार्य तेजी से आगे बढ़ रहा था।

इन परिस्थितियों में लोहा और कोयला उद्योगों में विदेशी सहायता से विकास हो रहा था। ऊपरी सिलेसिया में कोयले के उत्पादन में सबसे ज्यादा वृद्धि हुई जबकि राज्य के नियंत्रण वाले रूर और सार के कोयला खदान भी महत्वपूर्ण थे। 1838-50 के बीच कच्चे लोहे का उत्पादन 266,000 टन से बढ़कर 545,000 टन तक हो गया।

10.8.4 ज्वायंट स्टॉक बैंकों का विकास

पेरिस के क्रेडिट मोबाइलियर और बेल्जियम के सोसाइटे जेनरेल की तर्ज पर जर्मन राज्यों में ज्वायंट स्टॉक बैंकों के विकास से यह विस्तार संभव हो सका। अभी भी उद्योग को कृषि व्यापारिक पूंजी या उस क्षेत्र के 'कंजरवेटिव' बैंकिंग घरानों पर निर्भर करना पड़ रहा था जो सरकार या भूमिपतियों को ऋण देना ज्यादा पसंद करते थे (शैफेनहाउसेन या रोथ्सचिल्ड जैसे घराने), हालांकि बैंक ऑफ कॉमर्स ऐंड इंडस्ट्री की स्थापना के बाद पूंजी निवेश का एक नया प्रारूप स्थापित हुआ। कोलोन के बैंकर्स, ओपेनहिम, मेविसेन और डेशमेन के समर्थन से कार्लश्रुहे के एक बैंकर मोर्टिज वोन हेवेन ने इस बैंकिंग घराने की स्थापना की। रोथ्सचिल्ड ने फैंकफर्ट सिनेट में इसका जमकर प्रतिरोध किया। प्रशा के नागरिक सेवा अधिकारियों ने इसे हतोत्साहित किया जो कोलोन में शैफेनहाउसेन बैंकवेरिन का वर्चस्व देखना चाहते थे। हालांकि मूल पूंजी पेरियेर्स से प्राप्त हुई जिनके साथ एक समझौते द्वारा सिंडिकेट का निर्माण किया गया और इसके बाद नॉर्थ जर्मन लायड शिपिंग कम्पनी, आसट्रिआई रेलवे और राज्य ऋणों में व्यापक रूप से निवेश किया।

इसके बाद निम्नलिखित उद्यमों की स्थापना हुई :

क) डेविड हाउसमैन के नेतृत्व में डिस्कोन्टो-जेसलेसशैट ;और बाद में बिस्मार्क के बैंकर ब्लेशोडर जिसने 'प्रशियन कांसोर्टियम के जरिए प्रशा सरकार के लिए राज्य ऋण उगाहने में निर्णायक भूमिका अदा कीद्ध।

ख) बर्लिन्स हैंडेल्स जेसेलशैट, जिसने ब्लेशोडर और मेन्डेलशोन (बर्लिन) तथा मेविसेन और ओपेनहिम (कोलोन) के नेतृत्व में राइनलैंड और बर्लिन के बैंकों को एकजुट किया।

ग) ड्रेसनर बैंक, ड्यूश बैंक और डर्मस्टेडटर बैंक

घ) मैगडेबर्ग, हैंडल्स जेसेलशैट, जिसने स्थानीय बाजारों पर ध्यान केंद्रित किया।

ड) एफ. डब्ल्यू रैसिन रूरल कोओपरेटिव बैंक (इनकी शुरुआत 1862 में हुई) और शुलजे, डेलिटीसे कोओपरेटिव बैंक (इसमें शिल्पी और दुकानदार शामिल थे) की अलग तरीके से स्थापना हुई जो खासतौर से वर्टेमबर्ग और दक्षिण जर्मनी में केंद्रित थे।

बोध प्रश्न 2

1) औद्योगिक पूंजीवाद के विकास के आरंभ में जर्मनी की क्या सीमाएं थीं ?

....

....

....

....

....

2) 1789-1815 के बीच जर्मन राज्य ने पूंजीवाद के विकास के लिए क्या कदम उठाए?

....

....

....

....

....

10.9 1871 के बाद विकास

1871 में जर्मन साम्राज्य की स्थापना के बाद औद्योगिक उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई जिसने 1852 के उछाल को जारी रखा। जौलवेरिन ने बाजार को एक सूत्र में पिरोया और 1870 के बाद फ्रांस द्वारा प्राप्त भुगतान से सार्वजनिक व्यय का स्तर ऊंचा रहा। इन दोनों कारकों के कारण उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई।1870-74 की अवधि, जो साम्राज्य के स्थापना वर्ष (ग्रुन्डेरजारे) माने जाते हैं, में कुल घरेलू उत्पाद् में तीव्र दर से वृद्धि हुई। 1873 के वित्तीय संकट के साथ मंदी आई जो 1889 तक जारी रही। इस मंदी से पूरा यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका प्रभावित हुआ परंतु इस स्थापना के संकट (ग्रुंडरक्रिसे) से अन्तत: आर्थिक प्रसार बाधित नहीं हुआ। थॉमस-गिलकाइस्ट इस्पात निर्माण प्रक्रिया के पेटेन्ट किए जाने से जर्मनी को अपने फॉस्फोरिक कच्चे लोहे के संसाधनों के व्यापक उपयोग का मौका मिला, जिसके कारण संयुक्त राज्य अमेरिका में रेलवे उपकरणों की मांग बढ़ी और परिणामस्वरूप इस अवधि में तेजी से विकास हुआ जिसके आंकड़े नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

जर्मन उद्योग (1870-1913) में प्रतिवर्ष उत्पादन की औसत वृद्धि दर

औद्योगिक क्षेत्र	उत्पादन वृद्धि का %
धातु उत्पादन	5.7
लौह उत्पादन	5.9
इस्पात उत्पादन	6.3
धातुकर्म	5.3
रसायन	6.2
कपड़ा	2.7
वस्त्र और चर्मकर्म	2.5
गैस, पानी और बिजली	9.7

स्रोत : एस.बी.सॉल और ए मिलवार्ड, द डेवेलप्मेंट ऑफ द इकोनोमीज ऑफ कॉन्टीनेंटल यूरोप (1977 पृ026)

यह देखा गया कि इस समय स्टॉक बैंकिंग ने औद्योगिक प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उत्पादकों को प्रतिस्पर्द्धा से बचाया तथा उत्पादक-संघ और परिषद स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। कहने का तात्पर्य यह कि इन संगठनों की स्थापना किसी क्षेत्र में उत्पादन के मूल्य निर्धारण और उत्पादन नीति के संबंध में एक राय बनाने के लिए की गई। इन दबावों और परिस्थितियों के फलस्वरूप चार प्रमुख इस्पात कम्पनियों के मूल्यों और उत्पादों को नियमित करने के लिए 1904 में जर्मन स्टीलबर्ग एसोसिएशन की स्थापना की गई। इसी प्रकार के अन्य उत्पादक-संघ भी इस समय मौजूद थे। इस अवधि में प्रमुख कम्पनियों के निदेशक मंडल में बैंकों के प्रतिनिधि शामिल होते थे और उनके माध्यम से बैंक नीति निर्माण में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करता था। इस व्यवस्था से निस्संदेह प्रतिस्पर्द्धा को सकारात्मक रूप से कम किया जा सकता था और उत्पादन को सुनियोजित किया जा सकता था। इसके फलस्वरूप जर्मन उद्योग अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा के लिए खड़ा होने लगा। इस व्यवस्था में एक खराबी थी जिसे बहुत शिद्दत से महसूस किया गया : समझौतों के दौरान मजदूरों का ख्याल नहीं रखा जाता था जिससे मजदूरों में निराशा की भावना पैदा हो रही थी। विद्वानों का मानना है कि इन औद्योगिक टकरावों से हिंसा बढ़ी और शताब्दी का अंत होते-होते देश में वर्ग संघर्ष काफी तेज हो गया। विलियम II के शासन काल में शाही सरकार ने आर्थिक कार्यकलाप और प्रबंधन में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप कर वित्तीय पूंजी और औद्योगिक पूंजी की शक्तियों को दबाने की कोशिश की। 1914 के पहले उन्हें किसी प्रकार की सफलता नहीं मिली। सरकार ने हिबेर्निया उद्यम को खरीदने की असफल कोशिश की जिसे इस उद्योग ने सफलतापूर्वक परास्त कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत के समय भी वर्ग संघर्ष के समाधान के कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे।

10.10 सारांश

इस इकाई में हमने निम्नलिखित पक्षों पर विचार किया :

- फ्रांस और जर्मन औद्योगिक पूंजीवाद एक तरफ किसानों के भूमि से बंधे होने (फ्रांस में परम्परागत अधिकारों के तहत छोटे-छोटे खेतों पर अधिकार और जर्मनी में कृषि दास प्रथा) और दूसरी तरफ बड़े भूमिपतियों के संस्थागत वर्चस्व के कारण बाधित हुआ।
- उपर्युक्त परिस्थितियों के कारण राज्य ने, क) एकरूप कानून बनाने, ख) उद्योग को वित्त प्रदान करने ग) और एकरूप बाजार उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- हालांकि फ्रांस में फ्रांसीसी क्रांति ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की क्योंकि इस समय विशेषाधिकारों पर आक्रमण किया गया जिससे कुलीनवर्ग और श्रेणियों की पकड़ कमजोर हुई।

10.11 शब्दावली

पिछड़ापन : ऐसा समाज और अर्थव्यवस्था जो आधुनिक न बन सका हो।

फिजियोक्रेट्स : फ्रांस के लेखक और चिंतक जो किसी अर्थव्यवस्था के लिए भूमि को प्रमुख स्रोत मानते थे। उनका यह भी मानना था कि भूमि की उत्पादकता को भूमिपति ही बेहतर बना सकता था। किसी अर्थव्यवस्था को धन प्रदान करने में उद्योग और व्यापार का स्थान कृषि के बाद आता है।

मौद्रिक भुगतान : मुद्रा में किया गया भुगतान।

काश्त : खास अवधि के लिए किसानों को दिया जानेवाला खेत (जो उसका अपना न हो) जिसपर उसे तय अवधि तक खेती करने का अधिकार होता है।

किरायाभोगी प्रथा : निवेश से प्राप्त आय और किसी धंधे में न लगे होने के बावजूद निरंतर आय प्राप्त करना।

पितृसत्तावाद : परम्परागत रूप से समाज के श्रेष्ठजनों द्वारा किया जाने वाला कल्याणकारी कार्य; यह कार्य दान दक्षिणा या आधुनिक उद्योगों या आधुनिक राज्य द्वारा आयोजित सामाजिक कल्याण से अलग था।

10.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 10.2। आप पूंजीवाद के धीमे विकास को फ्रांसीसी बुर्जुआ वर्ग चरित्र के साथ जोड़कर देख सकते हैं।
2) देखिए उपभाग 10.3.2। आप फ्रांस में एकरूप शासन के अभाव, अलग-अलग कानूनी व्यवस्थाओं, व्यापार और उद्योग की निश्चित हैसियत न होने का उल्लेख कर सकते हैं।
3) देखिए उपभाग 10.4.1.। आप बता सकते हैं कि इसमें सम्पत्ति का पुनर्वितरण कैसे हुआ।
4) देखिए उपभाग 10.4.3.। आप उभरते हुए फ्रांसीसी उद्योगों की जरूरतों पर प्रकाश डाल सकते हैं।
5) देखिए भाग 10.5। आप बैंकिंग और ऋण सुविधाओं की स्थापना पर विचार कर सकते हैं।
6) देखिए भाग 10.6। इसमें आप बता सकते हैं कि अल्सास और लॉरेन के जर्मनी के हाथों में चले जाने के बावजूद किस प्रकार यहां के उद्योग सीमा के दोनों ओर कार्यरत रहे।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 10.7। आप समन्वित बाजार के अभाव, कोयला और लोहे की गुणवत्ता, कृषि दास व्यवस्था के कारण मजदूरों के आवागमन में आनेवाली बाधाओं, सीमित पूंजी आपूर्ति आदि की चर्चा कर सकते हैं।
2) देखिए भाग 10.7